श्री कामेश्वर सिंह 'सहायक प्रोफेसर'
राजनीति विज्ञान, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम।
वर्ग – बी० ए० पार्ट – I 'प्रतिष्ठा'
पत्र – प्रथम, यूनिट न० – 20
राजनीतिक सिद्धान्त – डॉ० पुखराज जैन
दिनांक – 30 07-2020

दबाव समूह की परिभाषा का शेष भाग :- . . .

मायरन वीनर :- "हित या दबाव समूहों से हमारा तात्पर्य शासन के ढाँचे के बाहर ऐच्छिक रूप से संगठित ऐसे समूहों से होता है जो प्रशासनिक अधिकारियों की नामजदगी और नियुक्ति, विधि-निर्माण और सार्वजनिक नीति के क्रियान्वयन को प्रभावित करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।"

प्रो० मदन गोपाल गुप्त के अनुसार :- " दबाव समूह वास्तव में एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा समान हित वाले व्यक्ति सार्वजनिक मामलों को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं। इस अर्थ में ऐसा कोई भी ~~सार्वजनिक~~ सामाजिक समूह जो प्रशासकीय और विधायी दोनों ही प्रकार के निर्णयकर्ताओं को, सरकार पर प्रत्यक्ष नियंत्रण प्राप्त करने की चेष्टा किये बिना ही प्रभावित करना चाहता है, दबाव समूह कहलाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखने से पता चलता है कि ऊपर की परिभाषाओं में संगठन पर जोर दिया जाता है। जबकि आधुनिक परिभाषाओं में संगठन पर बल नहीं दिया जाता है। अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि हित एवं दबाव समूह उन व्यक्तियों का एक ऐसा संगठित या ~~असंगठित~~ सामाजिक समूह है जो पारस्परिक कार्य व्यापार तथा लाभ के बन्धनों से जुड़े हैं और जिन्हें इन बन्धनों की जानकारी भी रहती है। वे हमेशा उन कार्यों को करते हैं जो हित समूह में रहने के नाते उन्हें करना चाहिए।

दबाव समूह के महत्व :- दबाव समूह का आधुनिक युग में महत्व बढ़ता जा रहा है न केवल लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत, वरन् सर्वाधिकारी राज्य में भी दबाव-समूह का महत्व है। लोकतांत्रिक समाजों में ये समूह राजनीतिक क्रियाशीलता के लिए स्वस्थ तत्व माने जाते हैं और अपने निहित स्वार्थों की रक्षा के लिए ये समूह अपने-अपने ढंग से सक्रिय रहते हैं। सर्वाधिकारी तथा साम्यवादी समाजों में ये समूह राज्य द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए साधन के रूप में कार्य करते हैं।

आज से अनेक वर्ष पूर्व दबाव-समूह राजनीतिशास्त्र में सम्मानजनक संगठन नहीं माना जाता था। हित-समूह, दबाव-समूह, लॉबी आदि ऐसे समूह थे जो हेय दृष्टि से देखे जाते थे। परंतु, आधुनिक काल में ये महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और सरकार पर इनका पूर्ण नियंत्रण है। आज शायद ही कोई ऐसा देश है जहाँ दबाव-समूह या गुट-समूह सरकार की निर्णय की प्रक्रिया को प्रभावित न करता हो। दबाव-समूह के महत्व को अग्रलिखित बिंदुओं से उजागर किया जा सकता है।

(1) सार्वजनिक नीति में व्यक्तिगत नागरिकों की सहभागिता :- दबाव-समूह सार्वजनिक नीति के निर्धारण में महत्वपूर्ण पार्ट अदा करता है। आम तौर से व्यवस्थापिका तथा कार्यपालिका ही सरकारी नीति के निर्धारण को एजेंट के रूप में काम करती है।

क्रमशः ......